haribhoomi.com

हरिभूमि बालभूमि

शुक्रवार 28 मार्च 2025

छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित

टीवी चाइल्ड आर्टिस्ट्स

अप्रैल फूल-डे पर प्रैंक्स का मजा

फर्स्ट अप्रैल यानी 'अप्रैल फूल-डे', ऐसा दिन जब हम दूसरों के साथ प्रैंक करके उसे मूर्ख ही नहीं बनाते, दूसरे भी हमें मूर्ख बनाते हैं। इस दिन मूर्ख बनाने या बनने का एक अलग ही मजा है। टीवी के कुछ चाइल्ड आर्टिस्ट्स अप्रैल फूल-डे पर फूल बनाने और बनने की अपनी मजेदार यादें **बालभूमि** के साथ शेयर कर रहे हैं।

मेरे प्रैंक पर पापा चौंक गए: वृही कोडवारा

सिर्फ दोस्तों के साथ ही नहीं, फैमिली में भी अप्रैल फूल-डे मनाने का एक अलग मजा है। सोनी सब के शो 'पुष्पा इंपॉसिबल' में स्वरा पटेल की भूमिका निभा रही वृही कोडवारा हंसते हुए अप्रैल फूल-डे से जुड़ा अपनी फैमिली का ही एक मजेदार इंसिडेंट बताती है, 'लास्ट ईयर मैंने अपने पापा को अप्रैल फूल बनाने की प्लानिंग की। उनसे कहा- मेरे स्कूल में आज से ही गर्मी की छुट्टियां शुरू हो गई हैं। अब दो महीने तक कोई क्लास नहीं होगी। पापा इस बात पर चौंक गए। उन्होंने स्कूल ग्रुप पर मैसेज चेक किया, तो उन्हें समझ में आ गया कि मैंने उनके साथ प्रैंक किया है। उन्होंने भी मजाक में कहा- अच्छा! तो अब घर पर ही एक्स्ट्रा पढ़ाई होगी।'

वृही उस घटना के बारे में भी बताती है, जब वो खुद अप्रैल फूल बन गई थी। वृही के साथ प्रैंक उसकी मम्मी ने किया था। वह बताती है, 'एक बार अप्रैल फूल-डे पर मम्मी ने मुझसे कहा- जल्दी से पैकिंग कर लो, हम अभी छुट्टी मनाने के लिए गोवा जा रहे हैं! मैं इतनी एक्साइटेड हो गई कि बिना कुछ सोचे झटपट बैग में अपने कपड़े भरने लगी। जब सब तैयारी हो गई तो मम्मी हंसकर बोलीं- अप्रैल फूल! मैं पहले तो हैरान रह गई, फिर हम सब जोर से हंसने लगे।' *

नहीं मिली चॉकलेट-टॉफी, मैं बन गया फूल: कविश खुंगर

अप्रैल फूल-डे है तो किसी से डरना कैसा, पापा से भी नहीं! शेमारू उमंग के लोकप्रिय शो 'मैं दिल तुम धड़कन' में कान्हा की भूमिका निभा रहे कविश खुंगर ने भी मजे से अपने पापा के साथ फर्स्ट अप्रैल को प्रैंक किया था। कविश हंसते हुए बताता है, 'मैंने पहली अप्रैल को अपने पापा के मोबाइल में हर पांच मिनट पर अलार्म सेट कर दिया। उन्होंने कई बार बंद किया, लेकिन अलार्म फिर से बजने लगता। वो इससे परेशान हो रहे थे। जब मैंने बताया कि यह मेरा काम था, तो पापा हंसने लगे और बोले- अरे, तूने तो मुझे सच में अप्रैल फूल बना दिया।'

कविश उस इंसिडेंट को भी याद करता है, जब वह अप्रैल फूल बना था। वह बताता है, 'एक बार, मेरे एक दोस्त ने मुझसे कहा- कविश, तुम्हारे लिए चॉकलेट्स और टॉफियां आई हैं। मैं सोचा- वाह! कितना अच्छा है! मैं खुशी-खुशी जाकर उस जगह पर देखा, जहां उसने चॉकलेट और टॉफियां रखी होने की बात कही थी। लेकिन वहां कुछ भी नहीं था। पीछे से आकर वह दोस्त हंसते हुए बोला- अप्रैल फूल! चॉकलेट्स और टॉफियां तो नहीं मिलीं, लेकिन मुझे मजा बहुत आया, क्योंकि यह एक प्रैंक था।' *

...तब समझ आया मैं बन गया था अप्रैल फूल: सौम्य आजाद

फर्स्ट अप्रैल को किसी के साथ प्रैंक करके अप्रैल फूल-डे एंज्वॉय न किया जाए, यह कैसे हो सकता है। एंड टीवी के शो 'हप्पू की उलटन पलटन' में रणवीर का रोल कर रहा सौम्य आजाद पिछले साल फर्स्ट अप्रैल के दिन सेट पर था, लेकिन यहां भी वह अपने फ्रेंड को मूर्ख बनाने से चूका नहीं। उसने इस शो में अपने को-आर्टिस्ट आर्यन प्रजापति को अप्रैल फूल बनाया था। सौम्य हंसते हुए बताता है, 'हम शूटिंग के बीच ब्रेक पर थे। मैंने आर्यन से बड़े सीरियस अंदाज में कहा- डायरेक्टर सर ने बुलाया है, वह कह रहे हैं कि तुम्हारा सीन बोगस शूट हुआ है। यह सुनकर बेचारा आर्यन दुखी हो गया। भागा-भागा डायरेक्टर सर के पास पहुंचा और बोला- सर, मैं फिर से कोशिश करता हूं, आप मुझे एक और टेक करने का चांस दे दीजिए। डायरेक्टर सर हंसते हुए बोले- अरे, तुम्हारा शॉट तो बहुत अच्छा हुआ, मैंने तो बुलाया ही नहीं! तब जाकर उसे समझ आया कि वह अप्रैल फूल बन चुका है। सेट पर जारा, मैं और बाकी सभी लोग जोर से हंस पड़े।'

सौम्य उस घटना का भी जिक्र करता है, जब वह खुद अप्रैल फूल बन गया था। वह बताता है, 'एक बार सेट पर ही आर्यन और जारा ने मिलकर मुझे अप्रैल फूल बनाया था। फर्स्ट अप्रैल के दिन जारा ने बड़े सीरियस टोन में मुझसे कहा- आज की शूटिंग कैंसल हो गई है, प्रोडक्शन से मैसेज आया है कि सभी घर जा सकते हैं। मैं तो खुशी से झूम उठा! फटाफट वैनिटी में जाकर ड्रेस बदली और बैग उठाकर घर जाने लगा। जैसे ही मैं गेट के पास पहुंचा, पीछे से जारा, आर्यन और पूरी टीम ने जोर से चिल्लाकर कहा- अप्रैल फूल! मैं वहीं खड़ा रह गया। सबकी हंसी सुनकर समझ आया कि इस बार मैं खुद ही अप्रैल फूल बन गया हूं।' *

जब मैंने खा ली नीम वाली चॉकलेट: हेत मकवाना

सन नियो के शो 'रिश्तों से बंधी डोर' में कान्हा का किरदार निभा रहा हेत मकवाना अपने दोस्त को अप्रैल फूल बनाने का मजेदार इंसिडेंट बताता है, 'मैंने फर्स्ट अप्रैल की सुबह अपने खास दोस्त से कहा- अरे, आज स्कूल में अप्रैल फूल-डे पर स्पेशल छुट्टी दी गई है! वह बिना कुछ सोचे खुशी-खुशी घर में बैठ गया। थोड़ी देर बाद, जब उसे पता चला कि स्कूल की छुट्टी नहीं है, तो वह भागता हुआ स्कूल आया। जैसे ही मैंने उसे देखा, मैं जोर से हंसते हुए बोला- अप्रैल फूल! वह पहले तो बहुत गुस्साया लेकिन बाद में मैंने उसे मना लिया। थोड़ी देर बाद, हम दोनों मिलकर इस मजाक पर खूब हंसे।'

हेत आगे अपने अप्रैल फूल बनने का भी एक मजेदार किस्सा सुनाता है, 'एक बार फर्स्ट अप्रैल के दिन, सुबह-सुबह मम्मी ने मुझे एक चॉकलेट दी और कहा- ये बहुत खास चॉकलेट है, मैंने तेरे लिए खासतौर से बनाई है। खाकर बताओ कैसी लगी? मैंने जैसे ही खाया, मुंह में कड़वाहट फैल गई, मम्मी से बोला-अरे! यह तो नीम की चॉकलेट थी! मम्मी जोर-जोर से हंसते हुए बोलीं- अप्रैल फूल बनाया! मम्मी के यह बताने पर मैं भी हंस पड़ा।' *

प्रस्तुति: बालभूमि फीचर्स

हास्य कविता

अलका जैन 'आराधना'

जंगल में अप्रैल फूल

चालू लोमड़ी, होशियार हाथी,
और जंगल के राजा शमशेर।
सब चौंक गए थे इक दिन,
देख जंगल में पत्तों का ढेर।
शमशेर सिंह ने जंगल में,
बैठक बुलाई इक आपात।
संदेह जताया उन्होंने यही,
शिकारी लगा के बैठे घात।
इसीलिए बनाए हैं ये गड्ढे,
ताकि हम इनमें जाएं गिर,
गिरकर ऐसे फंसें जाल में,
निकल न पाएं उससे फिर।
जल्दी से जल्दी हमें अब,
निकालना होगा कोई उपाय,
घोषणा करवा दो जल्दी,
जाल में कोई फंस न जाए।
सुनकर बातें राजा जी की,
भोलू भालू लगा मुस्काने
कहने लगा अप्रैल फूल है,
कोई भी इसका बुरा न माने।
सुनकर भालू की ये बात
शमशेर भी थोड़ा मुस्काया।
बोले-भालू भैया तुमने,
अप्रैल फूल हमें खूब बनाया।

कविता

डॉ. आर. पी. सारस्वत

ईद सुहानी आई है!

ईद सुहानी आई है!
घर-घर खुशियां लाई है।
सलमा, रजिया, सुल्ताना,
चहक रहीं चिड़ियों जैसी।
नाचें-झूमें, इधर-उधर,
आज लगें गुड़ियों जैसी।
सबने प्यारी-प्यारी-सी,
नई ड्रेस सिलवाई है!
अब्बू, अनवर इनके भाई,
फूले नहीं समाते हैं।
'ईद मुबारक' कहते-कहते,
सब पर प्यार लुटाते हैं।
रमजानी काका ने तो,
बांटी आज मिठाई है!
आज पड़ोसी राज, रतन
घर पर मिलने आए हैं।
अब्बू-चाचू ने दोनों,
अपने गले लगाए हैं।
मीठी-सिंवइयों की मिल,
दावत खूब उड़ाई है!!

कहानी

जाकिर अली 'रजनीश'

सादिक को मन ही मन ईदगाह के बाहर फटे-पुराने कपड़े में भीख मांग रहे लड़के की मदद नहीं कर पाने का बहुत अफसोस हो रहा था। ईद की खुशी वह महसूस नहीं कर पा रहा था। लेकिन अब्बू ने कुछ ऐसा किया कि सादिक की ईद की खुशी दुगनी हो गई।

ईद की दुगनी खुशी

ईद की नमाज खत्म होते ही सभी लोग एक-दूसरे से गले मिले, एक-दूसरे को मुबारकबाद देने लगे। इसके बाद सभी लोग अपने-अपने घरों की ओर चल पड़े। अपने दोस्तों से बातें करता हुआ सादिक भी ईदगाह से बाहर आ गया। तभी उसकी नजर सामने खड़े एक लड़के पर जा पड़ी। फटे-पुराने कपड़ों में लिपटा वह लड़का कह रहा था, 'बाबू जी, कुछ पैसे दे दो, हम भी खुशी मना लें।'

लड़के की दशा देखकर सादिक एक पल के लिए रुका। उसने सोचा ईद पर घर के बड़ों से उसे जो पैसे मिले हैं, उनमें से कुछ पैसे वह उस लड़के को दे दे। पैसे निकालने के लिए जैसे ही सादिक ने जेब में हाथ डाला, उसकी जेब खाली थी। दरअसल, वह अपने पैसे घर पर ही भूल आया था। घर लौटते हुए रास्ते भर सादिक उस लड़के के बारे में सोचता रहा। कब घर आ गया, उसे पता ही नहीं चला। घर में सभी लोगों से सलाम-दुआ करने के बाद वह अपने कमरे में जा बैठा। उसके चेहरे की खुशी अब काफूर हो चुकी थी। उसके मन में उस भिखारी लड़के की आवाज अब भी गूंज रही थी, 'बाबू जी ... हम भी खुशी मना लें।'

'कितना गरीब था वह लड़का। उसकी आवाज में भी कितना दर्द था। बेचारे के पास इतने पैसे भी नहीं कि ईद के दिन भी ठीक-ठाक कपड़े पहन सके।' सादिक के मन में बार-बार उस लड़के का ख्याल आ रहा था, '...क्या हम उसके लिए कुछ नहीं कर सकते? हमारा भी तो उनके प्रति कोई फर्ज है...।'

'क्या हुआ सादिक बेटे? तुम यहां अकेले क्यों बैठे हो?' अम्मी ने सादिक के कमरे में प्रवेश करते हुए पूछा। सादिक ने नजर उठाकर अम्मी को देखा फिर सिर झुका लिया, बोला कुछ नहीं।

अम्मी ने सादिक के उतरे चेहरे को देखते हुए कहा, 'चलो, सिंवइयां खा लो, मैंने निकाल कर रखी हैं।'

'नहीं अम्मी, अभी मेरा मन नहीं है।' सादिक धीरे से बोला।

'क्यों, क्या हुआ तुम्हें? कहीं बुखार-वुखार तो नहीं है?' सादिक की बात सुनकर अम्मी के माथे पर चिंता की लकीरें उभर आईं। 'नहीं अम्मी, ऐसी कोई बात नहीं है।' सादिक ने मुस्कुराने की कोशिश की, लेकिन मुस्कुरा नहीं सका।

'अच्छा, जाओ कुर्ता-पाजामा उतार कर पैंट-शर्ट पहन लो और दोस्तों के साथ घूम-फिर आओ। तुम्हारा मन बहल जाएगा।' कहती हुई अम्मी कमरे से बाहर चली गईं।

सादिक बेमन से उठा और कपड़े बदलने लगा। उसकी आंखों के आगे अब भी उसी लड़के की तस्वीर तैर रही थी। तभी अचानक उसे कहीं दूर से उसी लड़के की आवाज सुनाई पड़ी। वह लड़का पड़ोस वाले घर के सामने खड़ा अपनी बात दुहरा रहा था, 'बाबू जी! कुछ पैसे दे दो, हम भी खुशी मना लें।'

सादिक ने अलमारी से दस रुपए का नोट उठाया और सीधा बाहर की ओर भागा। उस लड़के के पास जाकर सादिक ने दस का नोट उसके हाथों में थमा दिया। दस रुपए का नोट पाकर उस लड़के का चेहरा खिल गया। सादिक भी उस लड़के की मदद करके मन ही मन बहुत खुश था। जाते-जाते उसने सादिक को सलाम किया। सादिक तब तक उसे देखता रहा, जब तक वह उसकी नजरों से ओझल नहीं हो गया। वह मुड़ने को था कि तभी किसी ने उसके कंधे पर हाथ रखा। उसने मुड़ कर देखा, सामने अब्बू खड़े थे। उनके हाथ में एक बड़ा-सा थैला था। उस थैले को देखकर सादिक को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने पूछा, 'इसमें क्या है अब्बू?'

'इसमें कपड़े और कुछ खाने-पीने की चीजें हैं।' अब्बू ने मुस्कुराकर जवाब दिया।

'लेकिन ये सब तो आप हमारे लिए पहले ही ले आए हैं। फिर से क्यों?' सादिक ने अब्बू की तरफ देखते हुए पूछा।

'आओ मेरे साथ, तुम्हें खुद पता चल जाएगा।' कहकर अब्बू एक ओर चल पड़े।

सादिक की कुछ समझ में नहीं आ रहा था। वह चुपचाप अब्बू के साथ हो लिया। चार-पांच गलियों को पार करते हुए वे लोग एक ऐसी जगह पहुंचे, जहां पर तमाम झुग्गी-झोपड़ियां बनी हुई थीं। उनकी ओर इशारा करते हुए अब्बू बोले, 'सादिक बेटे, इनमें वे लोग रहते हैं, जिन्हें त्योहारों पर भी ढंग का खाना नसीब नहीं होता। हमारा फर्ज बनता है कि हम इनकी मदद करें। यह सामान इन्हीं लोगों के लिए है। लो, इसे अपने हाथों से बांट दो।'

सादिक ने गर्व से अब्बू की ओर देखा। उसके चेहरे की चमक दुगनी हो गई थी। वह ईद के चांद की तरह चमक उठा। *

तुम्हारे लिए नई किताब / विज्ञान भूषण

दो मजेदार कहानियां

बच्चो, अभी कुछ समय पहले ही दो मजेदार कहानियों की चित्र पुस्तक 'उकड़ू उल्लू का चश्मा' छपकर आई है। इसमें पहली कहानी 'उकड़ू उल्लू का चश्मा' एक नन्हे उल्लू के सपने की कहानी है। वह नींद में सपना देखता है कि चश्मा पहनकर वह दिन की रोशनी देखने निकल पड़ता है। यह चश्मा उसे मंगू बंदर देता है। चश्मा पहनकर उसे कैसे मजेदार अनुभव होते हैं, यही इस कहानी में तुम पढ़ सकते हो।

किताब की दूसरी कहानी का शीर्षक 'गोलू बादल' है। यह एक नन्हे बादल की कहानी है, जो अपने बादलों के समूह से अलग हो जाता है। फिर वह हवा के झोंके के सहारे जंगल, नदी, पहाड़ों और एक स्कूल के ऊपर से गुजरते हुए खूब मजे करता है। जहां मन करता है अपनी बूंदें बरसा देता है। खास बात यह है कि ये कहानियां यहां तुम हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी पढ़ सकते हो। *

किताब: उकड़ू उल्लू का चश्मा, **लेखिका:** मीनू त्रिपाठी, **मूल्य:** 220 रुपए, **प्रकाशक:** अद्विक पब्लिकेशन, दिल्ली

हंसगुल्ले

नैंसी : ऐसा कौन-सा फूल है, जो होता तो है ! लेकिन दिखता नहीं है?

नव्या (काफी देर सोचने के बाद) : मुझे नहीं पता, तुम्हीं बता दो।

नैंसी (हंसते हुए) : अप्रैल फूल।

-खुशबू, रायपुर

तन्नू : ये लो, चॉकलेट खाओ।

चुन्नू : चॉकलेट! किस खुशी में?

तन्नू : आज तुम्हारा दिन है, इसलिए।

चुन्नू : लेकिन आज तो मेरा बर्थ-डे नहीं है। क्या है आज?

तन्नू : आज अप्रैल फूल-डे है।

-मुस्कान, राजनांदगांव

सोनू : क्या तुम जानते हो, सूरज रात को क्यों नहीं दिखाई देता है?

मोनू : तुम्हें इतना भी नहीं पता! एक्चुअली, दिन भर आसमान में घूम-घूमकर सूरज थक जाता है, इसलिए वह रात में सो जाता है।

-कुमकुम, बिलासपुर

जीके क्विज-147

1. हाल में ही धरती पर लौटीं सुनीता विलियम्स कितने दिनों तक अंतरिक्ष में रहीं?
2. आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 विजेता टीम को बीसीसीआई ने कितनी राशि देने की घोषणा की है?
3. छत्रपति शिवाजी के पहले मंदिर का उद्घाटन कहां किया गया?
4. विश्व स्वास्थ्य दिवस प्रत्येक वर्ष कब मनाया जाता है ?
5. ऐतिहासिक इमारत चार मीनार किस शहर में स्थित है?
6. एक्स-रे का आविष्कार किसने किया था?
7. एनीमिया नामक रोग शरीर में किस तत्व की कमी से होता है?
8. 'पॉवर हाउस ऑफ सेल' किसे कहा जाता है?
9. यक्षगान कहां का लोकनृत्य है?
10. उज्जैन किस नदी के किनारे बसा है?

बच्चों, जीके क्विज-147 का उत्तर बालभूमि के अगले अंक में प्रकाशित किया जाएगा। सही जवाब देने वाले बच्चों के नाम भी प्रकाशित किए जाएंगे। तुम अपने जवाब हमें balbhoomihb@gmail.com पर मेल कर सकते हो।

जीके क्विज-146 का उत्तर : 1.शुभमन गिल, 2.स्टीव स्मिथ, 3.केरल, 4.फुटबॉल, 5.गैनिमीड, 6.समुद्रगुप्त, 7.मध्य प्रदेश, 8.खान अब्दुल गफ्फार खान, 9.ह्वांगहो नदी, 10.रांची

जीके क्विज-146 का सही उत्तर देने वाले : गुंजा-रायपुर, अथर्व-बिलासपुर, पलक-अटेली मंडी, होमन-ईमेल से, राकेश-बलौदा बाजार, शुभम-बलौदा बाजार, टामेंद्र-धमतरी, आराध्या-गरियाबंद, एकता-ईमेल से

अंतर बताओ

बच्चो, यहां दिए गए दोनों चित्रों में एक शरारती चूहा रैट-ट्रैप से चीज निकालने की कोशिश कर रहा है। एक जैसे दिखने वाले इन दोनों चित्रों में पांच अंतर हैं। तुम्हें दो मिनट में ये सभी अंतर खोजकर बताने हैं। फटाफट सारे अंतर बताओ।

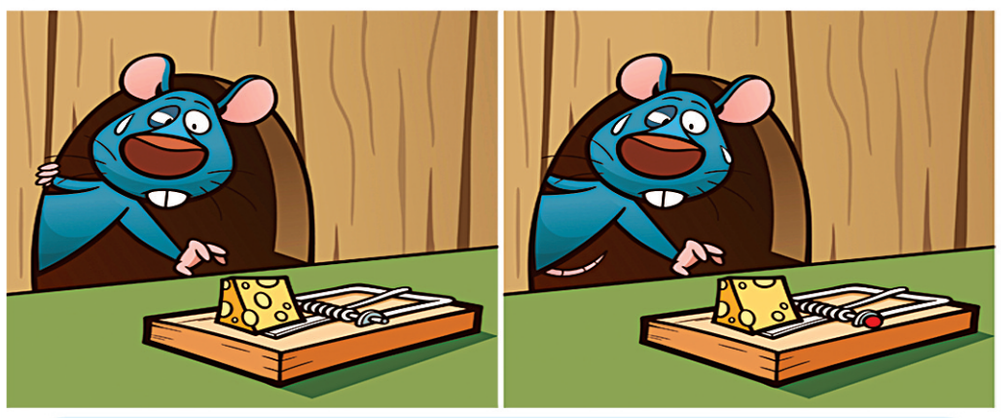

उत्तर: 1.चूहे के फेस पर दोनों तरफ पसीने की बूंद है। 2.चूहे के दाएं हाथ की अंगुली नहीं दिख रही है। 3.चूहे की पूंछ दिख रही है। 4.चीज पर कम बबल्स दिख रहे हैं। 5.रैट-ट्रैप की कड़ी का सामने वाला हिस्सा लाल है।

मैथ्स पजल

बच्चो, नीचे दिए गए पजल को ध्यान से देखो और कैलकुलेट करके बताओ कि प्रश्न वाचक चिन्ह के स्थान पर कौन-सी संख्या आएगी?

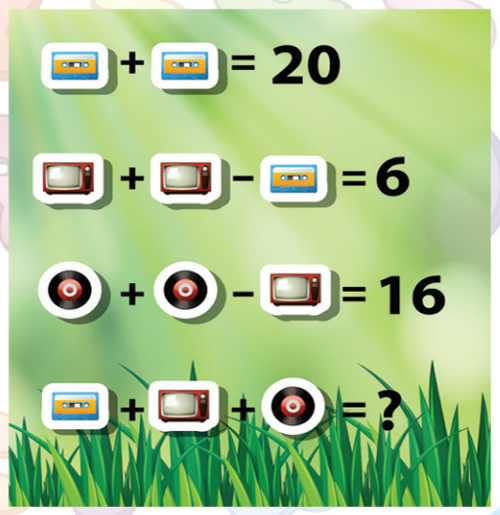

उत्तर : 30